उपन्यास के तत्वों के आधार पर मैला आंचल की समीक्षा

भाग- २

डॉ क्षमा मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग
श्री जे एन पीजी कॉलेज लखनऊ

मैला आंचल में पात्र एवम् चरित्र चित्रण

पात्रों की संख्या की दृष्टि से मैला आंचल अत्यंत वृहद उपन्यास है । लगभग 200 से भी अधिक पात्रों के साथ इस उपन्यास में प्रमुख पात्रों की संख्या भी कम नहीं है यद्यपि अनेक आधारों पर पात्रों का वर्गीकरण किया जा सकता है यथा -

१ प्रमुख पात्र

२ गौण पात्र

इनमें भी स्त्री एवं पुरुष पात्रों का विभाजन हो सकता है।

चरित्रों की विशिष्टता के आधार पर उन्हें दो प्रकारों में परिभाषित किया जा सकता है -

१ प्रतिनिधि या टाईप चरित्र

२ व्यक्तिपरक चरित्र

प्रतिनिधि चरित्र किसी सामाजिक समूह समुदाय अथवा वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में सामने आते हैं जबकि व्यक्तिगत चरित्र अपने ही व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण जाने जाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुख, गौण, स्त्री, पुरुष, प्रतिनिधि एवम् व्यक्तिपरक पात्रों का समावेश तो है ही साथ ही हम उन्हें मेरीगंज की जातियों के टोलों के पात्रों में विभक्त कर सकते है ।जाति या वर्ग के अनुसार उच्च वर्गीय निवासियों के टोलों में कायस्थ , राजपूत एवं ब्राह्मण टोला रखा जा सकता है, जबकि पिछड़ी जातियों के वर्गों मे तंत्रिमा टोला , संताली टोला , उवार टोला ,कुर्मी टोला ,रजक टोला, चमार टोला आदि के पात्र सम्मिलित है ।

कुछ पात्र उपन्यास में मात्र रोगी की भूमिका में ही सामने आते हैं इनमें सनिच्चर महतो , दासू गोप, निर्मला, रामचलि त्तर , सेवी मंडल, तेतरी और रामेश्वर का बच्चा आदि सम्मिलित है।

वही कुछ पात्र हैं जो कि पिछड़े वर्ग से सम्बद्ध हैं और उपन्यास में अंधविश्वास, मिथयाचा, रूढ़िवादिता के पोषक के रूप में दिखते हैं । उनमें जोतखी ,खलासी , चिचाय की मां ,रमजू की मां , पुलिया की मां , रामप्यारी जैसे पात्र हैं, जिनका कथा में कोई विशिष्ट योगदान नहीं है।

पिछड़ी जातियों के अतिरिक्त प्रभुता शाली वर्ग के प्रतिनिधि चरित्र में तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद मलिक ठाकुर राम कृपाल सिंह और हर गौरी सिंह खिलावन सिंह यादव दुलारचंद कापरा आदि को सम्मिलित कर सकते हैं। इन सभी चरित्रों में स्वार्थ प्रियता ,पाखंड व शोषित वर्गों पर बिना संकोच अत्याचार करने के गुण देखे जा सकते हैं।

उपन्यास में यद्यपि कोई केंद्रीय चरित्र प्रतीत नहीं होता परंतु कुछ आलोचकों का विचार है कि मैला आंचल में बावनदास न सिर्फ केंद्रीय चरित्र है वरन उपन्यास की संपूर्ण आत्मा इसी चरित्र के साथ जुड़ी हुई है यद्यपि उपन्यास में बावनदास बहुत कम समय के लिए अवतरित होता है और कथा के विकास में भी बहुत कम योगदान करता है परंतु यह सच है कि इस चरित्र में उपन्यास की आत्मा बसती है वास्तव में उपन्यास की धुरी भारतीय जन की स्वतंत्रता और उनके जीवन स्तर पर स्वतंत्रता के वास्तविक प्रभाव से जुड़ी हुई है । इस अर्थ में बावनदास अत्यंत महत्वपूर्ण चरित्र है गांधीवादी जीवन मूल्यों के जीवंत प्रतीक और जन कल्याण की कामना हृदय में रखने वाले बावनदास की जघन्य हत्या समाज की कुत्सित मनोवृत्ति को दर्शाती है।

परंतु चरित्रों की भरमार में कुछ पात्र ऐसे हैं जिन्हें हम प्रमुख पात्रों की श्रेणी में रख सकते हैं । इन प्रमुख पात्रों का संक्षिप्त चरित्र चित्रण इस प्रकार है ।

प्रमुख पुरुष पात्र

डॉ प्रशांत

इस उपन्यास के प्रधान पात्र डॉ प्रशांत अज्ञात कुल के हैं। उनका पालन पोषण उपाध्याय परिवार द्वारा जिसे नेपाल शासन में निष्कासित किया किया गया । जीवन में विभिन्न उतार-चढ़ाव और विषमताओं को देखते हुए डॉ प्रशांत ने डॉक्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1946 में उन्हें सरकार द्वारा विदेश जाने हेतु छात्रवृत्ति प्राप्त हुई किंतु विदेश ना जाकर भारत के ही पिछड़े

ग्रामीण इलाके मेरी गंज को उन्होंने अपने कार्य क्षेत्र के रूप में चुना । डॉक्टर के निर्णय को किसी ने मूर्खतापूर्ण कहा किंतु उनके प्राचार्य ने खुश होकर उनसे कहा-" तुमसे यही उम्मीद थी । मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूं, जब कभी तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो हमें लिखना।"

डॉ प्रशांत अत्यंत कुशाग्र बुद्धि युक्त, सरल हृदय ,निस्वार्थ सेवी, स्वप्नदर्शी ,कुशल संशोधक, दृढ़संकल्प , प्रगतिशील विचारधारा युक्त एवं कर्तव्य परायण व्यक्ति है। मेरी गंज पहुंचने पर गांव वालों द्वारा जाति के विषय में प्रश्न किए जाने पर उनका उत्तर उनकी प्रगतिशील विचारधारा को स्पष्ट करता है जहां वे अपनी जाति डॉक्टर घोषित करते हैं । वे एक संशोधक ही हैं समाज की प्रयोगशाला में शोध कर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि गरीबी और जहालत ही वह मूल कीटाणु में जो समाज में रोगों को प्रश्रय देते हैं । अशिक्षित ,अज्ञानता से युक्त ग्रामीणों की मन में उठती अनेक प्रकार की शंकाओं का सरल और सहज ढंग से वे निष्कासन करते हैं यद्यपि कहीं-कहीं इंजेक्शन देने के लिए उन्हें जबरदस्ती करनी पड़ती है , तो कभी गणेश की नानी को डायन समझने वाले अंधविश्वासी लोगों को समझा-बुझाकर सही मार्ग भी दिखाते है।

डॉ प्रशांत एक अत्यंत संवेदनशील, दृढ़ निश्चय एवं एक भावुक हृदय युक्त निश्चल प्रेमी नवयुवक है। मेरी गंज गांव में विश्व तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की बेटी कमली का उपचार करते हुए वे स्वयं भी प्रेम रोगी बन जाते हैं । कमली के इलाज के संदर्भ में बार-बार उसके घर जाते हुए निरंतर मिलने से मिलने के कारण है वह उसके व्यक्तित्व से परिचित होते हैं और उससे प्रेम करने लगते हैं परंतु मिट्टी का महादेव प्रशांत कमली के प्रेम में पड़ जाने के बावजूद भी अपने कर्तव्य में तत्पर रहता है।

डॉ प्रशांत ग्रामीणों के मध्य देवता के रूप में नहीं अपितु एक साधारण व्यक्ति के रूप में अपना जीवन यापन करते हैं। खेतों में गाए जाने वाले गीतों के शब्द उनके भी ह्रदय में हलचल या उथल-पुथल उथल-पुथल मचाते हैं कमला की निकटता उन्हें भावुक कर देती है और ऐतिहासिक प्रेमियों की कथाओं का स्मरण दिलाने लगती है। गांव के अनपढ़ और अज्ञानी लोगों के प्रति अत्यंत संवेदनशील एवं भावुक हृदय मनुष्य के रूप में देखते हैं प्रशांत का व्यक्तित्व परोपकारी व्यक्ति का व्यक्तित्व है जो सही मायनों में जनहित से जुड़े कॉमरेड बुद्धिजीवी हैं। वह जेल में रहकर भी गणेश का ध्यान रखते हैं और नानी की मृत्यु से निराश्रित गणेश को ब्रह्म समाज में रखने की व्यवस्था कर आते हैं अपने पुराने सेवक प्यारू को हर माह आर्थिक सहायता भेजते हैं । अपनी प्रेमिका कमली की पूछताछ करते रहते हैं और उसे अपनी सहचरी बनाकर उस शहर का रहा सहा आकर्षण भी अपने मन में नहीं रहने देते । जेल से रिहा होकर गांव को कर्मभूमि बनाते हैं हालांकि शहर में उन्हें ऊंचा पद प्रतिष्ठा मान सम्मान सुख सुविधा सब कुछ प्राप्त हो सकता था परंतु उस सब को त्याग कर ले मेरी गंज के सर्वतोमुखी विकास की ओर प्रयासरत रहते हैं।

बावन दास

बावन दास अज्ञात कुशील है । बलदेव और कालीचरण के अतिरिक्त 52 दास की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में आते हैं भवनदास ने 15 वर्ष पूर्व कांग्रेस का काम शुरू किया था उपन्यास के मंच पर 52 दास पहली बार मिनिस्टर के पूर्णिया आने के समय प्रवेश पाते हैं वह मेरी गंज में पहले पहल चरखा सेंटर खुलने के समय आए डेढ़ हाथ की ऊंचाई वाला यह डेढ़ हाथ की ऊंचाई वाली चलते समय ऐसे लगता मानो लुढ़क रहा हूं 1937 में जब जवाहरलाल नेहरू बिहार आए तो 52 दास के गले में उन्होंने माला पहनाई थी उसके पश्चात 1942 में 52 दास ने कचहरी पर झंडा लहराया और एक बार जेलर की बदमाशी के विरुद्ध 25 दिनों तक अनशन भी किया

52101 निर्मल ह्रदय व्यक्ति है सिम बढ़नी से लौटते समय सिमराहा स्टेशन के बाजार से 52 दास में मुखिया के चावल बेच कर पाए पैसे में से दो आने की जलेबियां खाली थी परंतु गलती महसूस होने पर उसने गले में उंगलियां डाल डाल कर कह कर डाली इसी प्रकार चंदन पट्टी के आश्रम में सोती हुई तारावती को देखकर भवनदास के मन में कामवासना जागृत हुई जिसके लिए उसने जिसके प्रायश्चित हेतु उसने 7 दिनों का उपवास किया था।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पटनिया रोग का शिकार होते हुए देखकर वह व्यथित होते हैं और गांधी जी की मृत्यु पर शोक ग्रस्त हो जाते हैं। गांधी जी के श्राद्ध के दिन होने वाले षड्यंत्र में कपड़े चीनी और सीमेंट आदि से लदी 50 गाड़ियों को रोक ने का प्रयास करना चाहा परंतु बदमाश स्मगलरों तथा तथाकथित कांग्रेसी दुलार चंद कापरा ने बावन के शरीर पर से ही गाड़ियों को चलवा दिया। बावनदास अपनी धुन का पक्का था । उसका शरीर गाडियों के पहियों से चिंदी चिंदी हो गया। दुलारचंद द्वारा बावनदास के शव को पाकिस्तान की सीमा में फिकवा दिया जाता है । जहां पाकिस्तानी सैनिक उसकी लाश को भारत पाकिस्तान की सीमा पर बहने वाली नागर नदी में बहा देते हैं इस प्रकार उनके शव को भारतवासी ना भारतवासी स्वीकार करते हैं और पाकिस्तान पाकिस्तानी।

यद्यपि बावनदास उपन्यास में अल्प काल के लिए ही मंच पर आता है किंतु अपनी अलौकिक आभा से सभी पात्रों को मात

कर देते हैं।

बालदेव

बालदेव चंनन पट्टी का निवासी है। मां की मृत्यु के बाद अजोधी भगत के यहां वह भैंसे चराता था । चंनन पट्टी में आयोजित कांग्रेस सभा में रामकिशन बाबू का जोशीला वक्तव्य सुनकर वह सुराजी दल में सम्मिलित होता है। इस दल के माध्यम से पूर्णिया जिले के कार्यालय में कार्य करता है कांग्रेसदल में रहते हुए उसे जेल जाना पड़ता है । बालदेव मेरी गंज में अपनी मौसी के यहां रहता है । यादव टोली के लोग उसे ही सरकार की नाराजगी का कारण उसे ही मानते हैं । साहब का किरानी उससे पूर्व परिचित होने के कारण उसे देश का सेवक कहकर प्रतिष्ठा देता है

ग्राम में हर गौरी एवं अन्य व्यक्ति जब उसे परेशान करते हैं तो वह अहिंसात्मक रवैया अपनाते हुए उसका प्रत्युत्तर देता है। गांव में मलेरिया सेंटर की स्थापना में भी पार्टी की अहम भूमिका है।उसकी ईमानदार प्रवृत्ति के कारण सारे गांव को भंडार देने का प्रबंध उसे ही सौंपा जाता है। लक्ष्मी की प्रेरणा से वो मठ में रम जाता है और उसके द्वारा दिए गए बीजक में ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय में तल्लीन हो जाता है । गांधीवादी बालदेव ईमानदार व्यक्ति है इसी कारण उसे कपड़ा चीनी आदि की पूजा बांटने का कार्य दिया जाता है वह गांव के सभी लोगों को गांधीवादी विचारों पर चलने के लिए प्रेरित करता है बावनदास द्वारा उन्हें गांधी जी द्वारा स्वयं लिखे गए पत्र गांगुली को देने का कार्य सौंपा गया था । वह अत्यंत सरल हृदय व्यक्ति है गांधी जी की हत्या का समाचार सुनकर रघुपति राघव राजा राम गाते गाते वह बेहोश हो जाता है धार्मिकता को अपनाने वाला बाल देव जाति भेद में विश्वास नहीं लगता एक आदर्श पति जो अपनी पत्नी लक्ष्मी को हमेशा उचित मार्ग पर ले जाता है आर्थिक अभावों में और बड़ा बालदिन कांग्रेसका एक्मिस्ट कार्य करता था स्वभाव से भोला भाला तथा अहिंसा वादी बाल दे कुछ कमजोरियों से युक्त था परंतु उसका मन पवित्र था।

कालीचरण

मेरीगंज के जागरण का श्रेय बालदेव के अतिरिक्त कालीचरण को भी दिया जा सकता है कालीचरण क्रांतिकारी विचारधारा से युक्त युवा शक्ति का प्रतीक व्यक्ति है। सोशलिस्ट पार्टी से प्रभावित है और इसी कारण एक बार चमार टोली में उसने भात खा लिया जिस पर नाई धोबी आदि ने उसका बहिष्कार कर दिया परंतु उसने सब की परवाह नहीं की।

कालीचरण स्वभाव से उग्र व्यक्ति था जिसे अपमान सहन नहीं होता था परंतु उग्रता के साथ-साथ उसके चरित्र में प्रेम का कोमल सूत्र भी विद्यमान था। औरतों से प्रायः पांच हाथ की दूरी पर रहने वाला कालीचरण रामदास जी महंती के प्रसंग में "आबलूस की मूर्ति "जैसी लक्ष्मी को देखकर प्रभावित हुआ था और बाद में मंगला देवी जो कि कांग्रेस की सदस्य थी , उनके बीमार पड़ने पर उसका यह व्रत टूट गया। मंगला देवी कांग्रेस की सदस्य थी परंतु उनकी सेवा के लिए कोई भी तत्पर नहीं था । " एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुख चैन से नहीं हो सकती ।" यह सोचने वाली मंगला देवी ने कालीचरण के आश्रय में सुख की नींद ली।

कालीचरण बम फोड़ने वाले मस्ताने भगत सिंह से भी प्रभावित हैं। यद्यपि वह बहुत अधिक शिक्षित नहीं था परंतु फिर भी उसके चरित्र कुछ विशेषताएं लोगों का विश्वास प्राप्त कराती है। वह एक कर्मठ ,ताकतवर, सेवा भावना युक्त ,न्याय के पक्ष में निर्णय लेने वाला ,ना हिचकने वाला , दृढ़ , निष्ठावान , मस्त, संवेदनशील युवक है ।यद्यपि कालीचरण में नायक बनने के सभी संभावनाएं विद्यमान थी परंतु मेरे गन का पिछड़ापन उसके चरित्र कि इन सारी संभावनाओं को निगल जाता है।

तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद

कायस्थ टोली के मुखिया तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद उपन्यास में शोषक वर्ग के प्रधान पात्र के रूप में आते हैं। गांव में सबसे ज्यादा भूमि , गांव में 1000 बीघा भूमि के स्वामी है वह तहसीलदारी को पाप की गठरी कहते हैं किंतु अनुचित तरीकों से किसानों की भूमि हस्त गत करते हैं एवं बड़ी चालाकी से गांव वालों को संस्थानों के विरोध में भड़काने का कार्य करते हैं।

शोषक विश्वनाथ प्रसाद का के हृदय का एक पक्ष परोपकारी और आदर्श पिता के रूप में भी प्रकट होता है । हजार बीघा जमीन के मालिक होकर भी अपनी पुत्री की शादी नहीं कर पाते जिससे उनकी पुत्री कमली मानसिक रूप से रोक लो जाती है यहां लेकर तहसीलदार के चरित्र के दो अंतर विरोधी रूपों को अंकित करते हैं एक पिता के रूप में वह एक अत्यंत स्नेहिल कोमल हृदय चिंता तो पिता है जबकि जमीदार के रूप में वह एक क्रूर और अत्याचारी व्यक्ति हैं।जमीदारी करते हुए वे कपड़े और चीनी बांटने का कार्य करते हैं । अत्यंत आदर्श पिता अपनी इकलौती संतान कमली को वह बेहद प्यार करते हैं और बेटी के

इलाज के लिए परेशान रहने वाले विश्वनाथ प्रसाद को जब कमली की गर्भावस्था का पता चलता है तो उन पर मानो आकाश गिर पड़ता है परंतु दूरदर्शी विश्वनाथ प्रसाद अपनी पुत्री और डॉक्टर प्रशांत का विवाह करवाते है और डॉक्टर प्रशांत कुमार और कंपनी की विवाह की खुशी में अपने असामी ओं को पास 5 बीघा जमीन लौटाने की घोषणा भी करते हैं।

उपन्यास के अन्य पुरुष पात्रों में हरगौरी , जोतखी, सुमिरतदस, सहदेव मिस्र, मठ के महंत रामदास, लरसिंह दास सेवादास, डॉक्टर का देवदूत नौकर प्यारू आदि महत्वपूर्ण पात्र हैं ।

उपन्यास के स्त्री पात्र

कमली

उपन्यास के स्त्री पात्रों में कमली और लक्ष्मी प्रधान पात्र के रूप में आते हैं। कमला तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की इकलौती संतान है । अत्यंत भोली भाली, संवेदनशील एवं प्रबुद्ध स्त्री तथा भारतीय स्त्रियों के प्रतिनिधि चरित्र के रूप में है जो प्रेम में अपना सर्वस्व को फोन कर सकती है। उसके विवाह के संबंध में कई जगह बातचीत तो होती है परंतु किसी कारणवश सगाई नहीं हो पाती इस कारण से उसे बेहोश हो जाने की मानसिक बीमारी हो जाती है। वह सुई और दवा से डरती है जब डॉक्टर प्रशांत पहली बार उसके घर सुई लगाने की बात करते हैं तब कमली कहती है -"सुई?.....नहीं , सुई नहीं ।...मां !..अरे बाप ....!.और ..दवा? .... दवा नहीं । मां, मैं दवा नहीं पियूंगी।"

डॉ प्रशांत के इलाज से वह हिस्टीरिया रोग से मुक्त होती है किंतु डॉक्टर को ही रोगी बना देती है डॉक्टर और कमली का प्रेम दिनों दिन बढ़ता जाता है और अंत में दोनों एक दूसरे को समर्पित हो जाते हैं यद्यपि कमली के माता-पिता इस संबंध को कलंक मानकर क्रोधित होते हैं और कमली को अपने ही घर में कैद कर दिया जाता है परंतु अंत में डॉक्टर के जेल से छूटने पर कमली नीलोत्पल को जन्म देकर मेरी गंज में ही रहने लगती है डॉक्टर को माटी का महादेव करती है ।

लक्ष्मी

लक्ष्मी किशोर अबोध, अनाथ बालिका है जो मठ का पालने पोसने और पढ़ाने लिखाने के लिए महंत सेवादास द्वारा लाई गई लेकिन जिसने उसे किशोरावस्था में पहुंचते ही उसका दैहिक शोषण आरंभ कर दिया और लक्ष्मी इस अन्याय के विरुद्ध खड़ी भी नहीं
हो सकी क्योंकि वह उसकी अन्य भक्षकों से रक्षा कर रहा था और अब वह ही उसके जीवन का आधार था। लक्ष्मी के द्वारा रेणु भारतीय समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति को अंकित करते हैं। विशेषतया निर्धन वर्ग की स्त्रियों की दशा को । लक्ष्मी पर अधिकार जमाने के लिए महंतों में मुकदमा चलता है और अंत में सेवादास मुकदमा जीत जाते हैं । वे उसे बेटी कहकर मठ पर लाता है किंतु मठ पर लाते ही उसे दासी बना लेता है अब वह लक्ष्मी पचास साल के बूढ़े व्यक्ति की कामवासना का शिकार होती है । सेवादास के मरणोपरांत रामदास भी इसी प्रवृत्ति को अपनाते हैं । लक्ष्मी मूलतः धार्मिक एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त है। इसी कारण वह पढ़ना लिखना भी सीख जाती है । लक्ष्मी के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता समझदारी व दबंगता के गुण भी विद्यमान हैं । इन्हीं गुणों के कारण लरसिंह दास के लार टपकाते इरादों से निपटने की क्षमता उसमें विकसित हो गई। सेवादास की मृत्यु के बाद लक्ष्मी बेसहारा और दुखी हो जाती हैं। उसकी ईमानदारी से प्रभावित होकर वह उसकी ओर आकृष्ट होते हैं तब लक्ष्मी का आदर्श प्रेमिका और पत्नी के रूप सामने आता है । लक्ष्मी का मन चंचल है बलदेव काम छोड़ने का विचार सुनकर वह दुखी हो जाती है महंत की दासी बनकर रहने के विचार से वह त्रस्त है उसके नाम पर महंत सेवादार 30 बीघे जमीन और फलों का एक बगीचा करते हैं । महात्मा गांधी की चिट्ठियों की पूजा चंदन और फूलों से करती है बालदेव द्वारा दी गई उन चिट्ठियों को जलाने से मना करती है और उन्हें बचाने के दौरान उसके वस्त्र जल जाते है , निर्वस्त्र शरीर पर फफोले निकल आते हैं । इस प्रकार वह संघर्षों से जूझती अदम्य जिजीविषा से पूर्ण संवेदनशील स्त्री पात्र है जो अन्य पात्रों के लिए प्रेरणा स्त्रोत सदृश है ।

ममता

उपन्यास में ममता का चरित्र विशेष आकर्षक है। प्रशांत विदेश में ना जाकर स्वदेश में ही पीड़ितों की सेवा करने का निर्णय लेता हैं और तब ममता कहती है -"ओह प्रशांत , तुम कितने बड़े हो , कितने महान !" ममता का यह कथन डॉ प्रशांत के निर्णय की महत्ता को प्रकट करता है। डॉक्टर प्रशांत के जेल से रिहा होने पर वह उसे लेने वहां पहुंचती है उसके मन में मानव के प्रति उमड़ते स्नेह को देखकर प्रसन्न और संतुष्ट होती है । यहां पर ममता एक त्यागशील प्रेमिका और आदर्श नारी के रूप में दिखाई

देती है ।उसके गुणों के कारण स्वयं रेणु ममता की तुलना शरद बाबू के उपन्यासों की नारी से पात्रों से करते हैं ।

अन्य स्त्री पात्रों में सेविया, फुलिया , रमपियारिया आदि सम्मिलित है।

पात्रों के चरित्र चित्रण का अनुशीलन करने पर हम पाते हैं कि रेणु ने अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से पात्रों का परिचय देते हैं । यद्यपि नायक नायिका के रूप में कोई पात्र निश्चित नहीं किया जा सकता परंतु डॉ प्रशांत और कमला सब पात्रों में घुल जाते हैं एकदम अलग नायक नायिका की छवि बना कर नहीं रह जाते । महत्वपूर्ण सभी है-जैसे बालदेव, लक्ष्मी, महंत सेवा दास, कालीचरण और बावन दास। परंतु इतना महत्वपूर्ण कोई नहीं कि वह क्लासिक पात्र बन सके इसीलिए यहां यदि कोई नायक का चरित्र है तो वह है - अंचल। आंचल ही नायक है और संपूर्ण उपन्यास में उसकी ही विराट छवि से जुड़ी असंख्य छवियों को प्रस्तुत किया गया है।